इकाई १२ नेपाल में अर्थव्यवस्था और समाज

इकाई की रूपरेखा

१२.० उद्देश्य

१२.१ प्रस्तावना

१२.२ भू-प्रदेश

१२.३ समाज

- १२.३.१ नृजाति एवं जाति
- १२.३.२ धर्म
- १२.३.३ भाषा

१२.४ अर्थव्यवस्था

- १२.४.१ नियोजित आर्थिक विकास
- १२.४.२ नब्बे के दशक में आर्थिक सुधार

१२.५ आर्थिक क्षेत्रा

- १२.५.१ कृषि क्षेत्रा
- १२.५.२ भूमि सुधार
- १२.५.३ उद्योग-धन्धे
- १२.५.४ औद्योगिक नीतियाँ
- १२.५.५ पर्यटन
- १२.५.६ व्यापार

१२.६ नेपाल-भारत व्यापार संबंध

१२.७ सारांश

१२.८ कुछ उपयोगी पुस्तकें

१२.९ बोध प्रश्नों के उत्तर

१२.० उद्देश्य

यह इकाई नेपाल की अर्थव्यवस्था और उसके समाज का परिचय प्रस्तुत करती है। यह नेपाल के आर्थिक पिछड़ेपन और उसके विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों का विश्लेषण भी प्रस्तुत करती है। जनसांख्यिकीय प्राधार, नृजातीय समूह व नेपाल की सामाजिक संरचना पर विस्तार से चर्चा की गई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि :

- नेपाल की समष्टिक नृजाति एवं सामाजिक संरचना का विश्लेषण कर सकें;
- अर्थव्यवस्था के महत्त्व का वर्णन कर सकें;
- पंचवर्षीय योजनाओं संबंधी विकास-लक्ष्य एवं उनके प्रभाव को स्पष्ट कर सकें; तथा
- भारत के साथ नेपाल के विशेष व्यापार संबंध के पीछे छिपे कारणों को स्पष्ट कर सकें।

१२.१ प्रस्तावना

नेपाल एशिया के दो शक्तिशाली देशों के बीचोंबीच हिमालय पर्वतमाला में स्थित है – दक्षिण में भारत और उत्तर में चीन। बीसवीं शती-मध्य तक अपने ही ढंग के एक कृषिक समाज – नेपाल ने राजतंत्रा की पुनर्स्थापना के साथ १९५१ में आधुनिक युग में प्रवेश किया। उस समय में नेपाल के पास आधुनिकीकरण के लिए कोई महत्त्वपूर्ण आाधारिक संरचना नहीं थी। वहाँ मुश्किल से ही कोई स्कूल, अस्पताल, सड़कें, दूरसंचार सुविधाएँ, विद्युत् शक्ति, उद्योग-धन्धे अथवा नागरिक सेवाएँ थीं। अपने नियोजित आर्थिक विकास प्रयासों की बदौलत नेपाल ने सतत आर्थिक विकास की दिशा में प्रगति की है। फिर भी, यह देश मात्रा २४० डॉलर से कुछ ऊपर की प्रतिव्यक्ति आय के साथ विश्व के दरिद्रतम देशों में अपना स्थान रखता है। उसकी लगभग आधी आबादी ग़रीबी की रेखा से नीचे रहती है।

नेपाल मुख्य रूप से एक कृषि-प्रधान देश है। यहाँ सुपरिभाषित सामाजिक स्तरण के साथ एक सामंती समाज विद्यमान है। लोगों का विविध नृजातीय-धार्मिक घालमेल नेपाल को एक अनुपम सांस्कृतिक विरासत प्रदान करता है। सबसे पहले हम नेपाल में समाज की नृजातीय संरचना पर सूक्ष्म दृष्टि डालेंगे। तदोपरांत, हम विरासत में मिलीं और विद्यमान आर्थिक दशाओं की जाँच करेंगे, तथा उनका मूल्यांकन करेंगे।

१२.२ भू-प्रदेश

दो विशालकाय देशों – चीन और भारत के बीच दबा नेपाल बहुत ही पर्वतमय और पर्वताकार है। स्थूल रूप से आकार में आयताकार, लगभग ६५० किमी. लम्बा और लगभग २०० किमी. चौड़ा, नेपाल भूमि के १,४७,१८१ वर्ग किमी. क्षेत्राफल के साथ दक्षिण एशिया में तीसरा सबसे बड़ा देश है। नेपाल एक भू-आवेष्टित देश है जो तीन ओर भारत से और उत्तर में चीन के जियांग स्वायत्त क्षेत्रा (तिब्बत) से घिरा है। यह बांग्लादेश से भारत के पश्चिम बंगाल की लगभग १५ किमी. चौड़ी पट्टी द्वारा विभक्त है, और भूटान से अट्ठासी-किमी.-चौड़े भारतीय राज्य सिक्किम से। अपनी सीमाबद्ध भौगोलिक स्थिति के कारण ही नेपाल परिवहन सुविधाओं व समुद्र-प्रवेश मार्ग – यथा, बंगाल की खाड़ी के लिए पूरी तरह भारत पर निर्भर है।

छोटा आकार होने के बावज़ूद नेपाल में प्राकृतिक वैविध्य पाया जाता है, जो तराई के मैदान – दक्षिण में समुद्र-तल से लगभग ३०० मीटर ऊपर स्थित गंगाई मैदान के उत्तरी किनारे से लेकर उत्तर में ८,८०००-मीटर-ऊँचे माउण्ट एवरेस्ट, स्थानीय रूप से सागरमथ (अपने नेपाली नाम), तक फैला है। यह देश आम तौर पर तीन प्रमुख भू-आकृतीय क्षेत्रों में बँटा है : पर्वतीय क्षेत्रा, पहाड़ी क्षेत्रा, तथा तराई क्षेत्रा। तीनों ही एक-दूसरे के समांतर हैं – पूर्व से पश्चिम तक, अविछिन्न पारिस्थितिक कटिबंधों के रूप में, जो देश के नदी तंत्रों द्वारा अर्घित किया जाता है। पर्वतीय क्षेत्रा अथवा पर्बत पहाड़ी क्षेत्रा के उत्तर की ओर समुद्रतल से ४००० मीटर अथवा उससे अधिक की ऊँचाई पर स्थित है। विश्व की कुछ सर्वोच्च चोटियाँ इसी क्षेत्रा में पायी जाती हैं। यह क्षेत्रा विरल रूप से बसा है, और जो कुछ भी कृष्य कार्यकलाप है, निचली घाटियों और नदी क्षेत्रों तक सीमित है, जैसे कि उपरली काली गंडकी घाटी।

पर्वतमाला का दक्षिण ही पहाड़ी अथवा पहाड़ क्षेत्रा कहलाता है। १००० से लेकर ४००० मीटर तक की ऊँचाइयों के साथ, इस क्षेत्रा में काठमाण्डू पट्टी शामिल है जो कि देश का सर्वाधिक उर्वर और शहरीकृत क्षेत्रा है। पहाड़ियों की दो प्रमुख शृंखलाएँ, सामान्य तौर पर महाभारत लेख और शिवालिक पर्वतमाला (अथवा चूरिया रेन्ज) के नाम से मशहूर, इसी क्षेत्रा में स्थित हैं। यद्यपि यह भूभाग भौगोलिक रूप से पृथक् है और किंचित ही कृषि संभावना रखता है, क्षेत्रा ऐतिहासिक रूप से नेपाल का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। काठमाण्डू घाटी और निचले पहाड़ी क्षेत्रा घने बसे हैं।

नेपाल-भारत सीमा के साथ-साथ फैला पहाड़ी क्षेत्रा का दक्षिण ही तराई क्षेत्रा है। समतल, कछार भूमि वाली यह एक निम्न-भूमि उष्णकटिबंध और उपोष्ण कटिबंध मेखला है। समुद्रतल से लगभग ३०० मीटर की ऊँचाई से शुरू होकर शिवालिक पर्वतमाला के चरणों से लगभग १००० मीटर की ऊँचाई तक, यह क्षेत्रा देश की जीवन-रेखा है। हिमालय से उद्‌गमित नदियाँ तराई में ही प्रकट होती हैं और दक्षिण की ओर बहती हैं, उनमें से कुछ उत्तरी भारत में गंगा की सहायक नदियाँ बनती हैं। यह भूभाग बाढ़ प्रवण है, जो नियमित रूप से ग्रीष्मकालीन मानसून जलाधिक्य के साथ आती है। तराई की ज़मीन में उपजाऊ उपरी परत उसे सबसे सम्पन्न आर्थिक क्षेत्रा बनाती है, खेती और वनभूमि दोनों ही दृष्टियों से भूमि के लिए लालायित पहाड़ी किसानों के लिए यह सबसे अधिक लुभावना स्वदेशी ठिकाना बन गया है। देश की लगभग आधी जनसंख्या इस भूभाग में रहती है।

१२.३ समाज

सन् २००३ के अनुमान के अनुसार, नेपाल की आबादी २.६५ करोड़ है, जिसमें लगभग १.३५ करोड़ पुरुष और लगभग १.२९ करोड़ महिलाएँ हैं। पचास के दशक से ही यहाँ की आबादी २ प्रतिशत प्रतिवर्ष से भी अधिक की औसत दर से बढ़ती रही है। जनसंख्या वृद्धि में योगकारी मुख्य कारक हैं – उच्च जन्मदर, शिशु मृत्युदर में गिरावट और औसत जीवन-प्रत्याशा में बढ़ोत्तरी। उक्त वर्ष के अनुमान नेपाल की जन्मदर ३२०४६ जन्म प्रति १००० आबादी बताते हैं, जबकि मृत्युदर ९.८४ मौतें प्रति १००० आबादी रही है।

जनसंख्या वृद्धि में एक भौगोलिक भिन्नता पायी जाती है। यह देखा गया है कि नेपाल के पश्चिमी भाग में पूर्वी भाग के मुकाबले पर्वतीय और तराई दोनों ही क्षेत्राों में बसावट अधिक हुई है। पहाड़ी क्षेत्रा के मध्य माग ने सर्वोच्च जनसंख्या वृद्धि दर्ज़ की है। जनसंख्या वृद्धि का यह रुझान सत्तर के दशक में शुरू हुआ और संभवत: भविष्य में भी जारी रहेगा। काठमाण्डू में सबसे अधिक सघनता दर्ज की गई, इसके बाद आते हैं – भक्तपुर, ललितपुर और धनुष ज़िले। पर्वतीय इलाकों में, बहरहाल, जनसंख्या घनत्व कम है।

द्रुत जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप जन समाज और कृषियोग्य भूमि के बीच अनुपात उत्तरोत्तर बिगड़ता ही रहा है। पहाड़ी क्षेत्रा में जनसंख्या दबाव ने फसलों, ईंधन, व पशुचारा के लिए वन आवरण के नि:शेषीकरण की ओर प्रवृत्त किया है। तराई क्षेत्रा में वन-आवरण भी भू-लालायित पहाड़ी लोगों के प्रवसन के साथ तेजी से विलुप्त हो रहा है।

पचास के दशक से नेपाल सरकार संघटनकारी नियोजन कार्यक्रमों द्वारा जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किए जाने पर ज़ोर देती रही है, जिनमें शामिल हैं – सामान्य स्वास्थ्य एवं जच्चा-बच्चा कल्याण कार्यक्रम, दो बच्चे प्रति परिवार प्रतिमान को बढ़ावा दिया जाना, नारी स्वास्थ्य एवं शिक्षा को प्रोत्साहित करना तथा समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारना।

१२.३.१ नृजाति एवं जाति

नेपाल एक ऐसा राष्ट्र है जिसे "भौतिक रूप से दरिद्र, पर सांस्कृतिक रूप से धनी" कहा जाता है। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण नेपाल जाति-प्रजातियों का एक मिलन-स्थल रहा है। भारत से आये हिन्दू-आर्यजन अथवा गोरी चमड़ी वाले लोग, और तिब्बत से आये मंगोलियाई अथवा तिब्बती-बर्माई लोग। मंगोलियाई प्रजाति समूह नेपाल के पूर्वी भाग से लगे इलाकों में रहते हैं। शेरपा और तमांग इसी वंश के लोग हैं। वे आम तौर पर बौद्धधर्म अपनाते हैं। हिन्दू-आर्यजन प्रधान रूप से नेपाल के पश्चिमी भाग में निवास करते हैं। नेपाल के मध्य भाग में इन दोनों ही प्रजातियों का घालमेल पाया जाता है। यहाँ कुछ प्रमुख नृजातीय समूहों में हैं – नेवाड़, राय, लिम्बू, गुरुङ, और मागर।

नेपाली जन समाज को स्थूल रूप से दो मुख्य सांस्कृतिक समूहों में बाँटा जा सकता है : पर्बतिया (पहाड़ी लोग) अथवा गोरखली तथा मधसिया। पर्बतिया जन नेपाल की पर्वतीय संस्कृति से संबंध रखते हैं जो कि वही पहाड़-घाटी संस्कृति है जो दो धार्मिक-सांस्कृतिक विचारधाराओं का समन्वयवाद कहलाया – तिब्बत से बौद्धधर्म और भारत से हिन्दूधर्म। मधसिया, दूसरी ओर, मैदानी संस्कृति से ताल्लुक रखते हैं, यथा भारतीय राज्यों बिहार एवं उत्तर प्रदेश की संस्कृति। ये दोनों समूह अपनी भाषा और वेशभूषा में भिन्न हैं, यथा पर्बतिया जन नेपाली बोलते हैं और मधसिया जन हिन्दी की स्थानीय बोलियाँ, यानी मैथिली या भोजपुरी या फिर अवधी।

पर्बतियों की श्रेणी में बड़ी संख्या में सांस्कृतिक समष्टियाँ आती हैं, जैसे – हिन्दू, नेवाड़, तमांग, किरती, गुरुंग, मागर व लिम्बू, शेरपा, सुनवार, सुन्थाल तथा थकाली।

पहाड़ी हिन्दू मुख्य तौर पर भारतीय मूल के लोग हैं जो नेपाल में चौदहवीं शती के आसपास आकर बस गए थे। वे संख्या में बहुत हैं मगर व्यापक रूप से फैले हुए हैं। यद्यपि पहाड़ी हिन्दू तथा तराई हिन्दू एक ही धर्म अपनाते हैं, वे अपनी भाषा और संस्कृति में भिन्न हैं। पहाड़ों के अन्य लोगों की ही भाँति, पहाड़ी हिन्दू जन नेपाली बोलते हैं और संस्कृति में हिस्सेदार हैं, परन्तु तराई हिन्दूजन हिन्दी की बोलियों में से कोई एक बोली बोलते हैं और मैदानों की संस्कृति के प्रभाव में हैं।

पहाड़ी हिन्दुओं में क्षत्रिाय एवं ब्राह्मण प्रमुख जातियाँ हैं। वे नेपाल की आबादी के क्रमश: १५ प्रतिशत एवं १२ प्रतिशत का निर्माण करती हैं। क्षत्रियों की टाकुरी उपजाति देश के शासन अभिजात वर्ग का निर्माण करती है। शाही परिवार और राणा जन, जिन्होंने नेपाल पर एक सौ वर्षों से भी अधिक राज किया, दोनों ही क्षत्रिाय जाति के हैं। ब्राह्मण जन देश को बुद्धिजीवी वर्ग प्रदान करते हैं।

नेवाड़ देशज लोग हैं और काठमाण्डू घाटी में और उसके आस-पास संकेंद्रित हैं। जनसंख्या के लगभग तीन प्रतिशत नेवाड़ की अपनी ही भाषा है जिसे नेवाड़ी कहा जाता है। मूल रूप से ये लोग बौद्ध थे, परन्तु उनमें से बड़ी संख्या में लोगों ने हिन्दू जाति-व्यवस्था के विभिन्न पहलू अपना लिए हैं। नेवाड़ जन अपने पूर्वजों का संबंध लिछवी शासकों से जोड़ते हैं और नेपाली समाज में व्यापारियों और सरकारी प्रशासकों के रूप में छाये रहे हैं। उनमें साक्षरता की उच्च दर पायी जाती है।

मागर जन देश की जनसंख्या के सात प्रतिशत से भी अधिक का निर्माण करते हैं, और नेपाल के सबसे बड़े देशज नृजातीय समूह का भी हिस्सा हैं। वे मागर, खाम और तराई भाषाएँ बोलते हैं। मुख्य रूप से पश्चिमी और केन्द्रीय भागों में रहने वाले ये लोग गुरुङ जनों से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। उत्तर में रहने वाले लोग बौद्ध धर्म को मानते हैं जबकि दक्षिण में रहने वाले लोगों ने हिन्दू प्रथाओं को अपनाया है।

तमांग और किरती जनसंख्या के क्रमश: पाँच और तीन प्रतिशत हैं। गुरुंग, लिम्बू, शेरपा, सुनवा, सुन्थाल और थकाली संख्या में कम हैं जिनमें से हरेक जाति जनसंख्या के एक से दो प्रतिशत का निर्माण करती है। ये समूह परम्परागत रूप से एक प्रकार के लामावादी बौद्धधर्म को अपनाते थे जो बौद्ध परम्परा को बॉन धर्म की बौद्ध-पूर्व प्रथाओं से मिलाता है।

१२.३.२ धर्म

नेपाल एक हिन्दू राज है, और राजा को संरक्षक के रूप में देखा जाता है तथा हिन्दू देवता विष्णु के इहलौकिक विश्वरूप में उसे अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। नेपाल की राजनीतिक व्यवस्था में हिन्दूवाद की यह प्रमुख स्थिति जन समुदाय के सभी हिस्सों द्वारा स्वीकार की गई है।

१८वीं शताब्दी में गोरखा शासन के आगमन से पूर्व बौद्धधर्म इस क्षेत्रा में एक फलता-फूलता धर्म था। गोरखा शासकों ने नेपाल की विशिष्ट पहचान को हिन्दू राज्य के रूप में पेश किया। राज का हिन्दवीकरण राणा शासकों द्वारा पूरा किया गया जो १८५४ की नागरिक आचार-संहिता के माध्यम से हिन्दू सामाजिक पदानुक्रम में विभिन्न नृजातीय समूहों को ले आये। धार्मिक एवं सामाजिक प्रथाओं

के संहिताकरण तथा मानकीकरण ने प्रभावशाली नेपाली संस्कृति को अनेक नृजातीय समूहों के स्वांगीकरण की ओर प्रवृत्त किया। आज बड़ी संख्या में लोग हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म तथा / अथवा जीववादी परम्पराओं के एक समन्वयी मिश्रण को अपनाते हैं। वे एक ही देवी-देवताओं की पूजा करते हैं और कुछ त्यौहारों को साझा तौर पर मनाते हैं।

लोकतंत्रा के कदम रखते ही अनेक नृजातीय एवं अल्पसंख्यक धार्मिक समूहों ने अपनी समूह पहचानों की अधिकार-माँग शुरू कर दी है। इन पहचान आन्दोलनों का प्रभाव १९९१ व २००१ की जनगणना रिपोर्टों में प्रकट होता है। हिन्दुओं के रूप में पहचान प्राप्त लोग ८६.५ प्रतिशत से घटकर ८०.६ प्रतिशत ही रह गए। २००१ की जनगणना में जनसंख्या के ११ प्रतिशत को बौद्ध तथा ४.२ प्रतिशत को मुस्लिमों के रूप में पहचाना गया। आबादी के लगभग ३ प्रतिशत लोग देशज कीरन्त मुण्डम धर्म को अपनाते हैं। ईसाई धर्म को मानने वाले आबादी के ०.५ प्रतिशत से भी कम हैं।

१२.३.३ भाषा

नेपाल में १२५ विभिन्न प्रलेख प्रमाणित भाषाएँ बोली जाती हैं। ये दो विशिष्ट भाषा उप-समूहों से ताल्लुक रखती हैं – भारतीय-यूरोपीय तथा तिब्बती-बर्मी भाषाएँ। नेपाल की राष्ट्र-भाषा को नेपाली, औपचारिकत: गुरखाली अथवा खसकुरा के नाम से जाना जाता है। यह भारतीय-यूरोपीय भाषा उपसमूह से संबंध रखती है। यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। मैथिली, भोजपुरी, अवधी, थारू, दानुवारी और माझी भारतीय-यूरोपीय भाषा उपसमूह से मुताल्लिक भाषाओं का दूसरा समूह है, जो तराई में रहने वाले लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

तिब्बती-बर्माई भाषा उपसमूह से संबंध रखने वाली भाषाएँ पर्वतीय क्षेत्राों में रहने वाले नृजातीय समूहों द्वारा बोली जाती हैं। तिब्बती भाषा और उसकी भाषिकाएँ नेपाल में रहने वाले शेरपाओं और भोटियाओं अथवा तिब्बतियों द्वारा बोली जाती हैं। भाषाओं के इन दो परिवारों के अलावा कुछ गौण भाषा-समूह भी पाये जाते हैं, ये हैं – सतार जो कि मुण्डा परिवार से संबंधित भाषा है, और धङगर जो कि द्रविड़ परिवार से संबंधित है।

१९५१ में सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने सभी विद्यालयों में निर्देश माध्यम के रूप में नेपाली के प्रयोग की सिफारिश की। तभी से सरकार ने एक भाषा के अन्तर्गत राज्य को एकीकृत करने के सभी संभव उपाय किए हैं। नब्बे के दशक तक, बड़ी संख्या में बहुसंख्यक वर्ग, लगभग दो-तिहाई लोग, इसी भाषा को बोलते थे। तथापि, अनेक अल्पसंख्यक वर्गों और नृजातीय समूहों के लिए भाषा अपने राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए – केन्द्रीय निर्णयन् प्रक्रिया में यथोचित हिस्सा पाने के लिए – एक सशक्त माध्यम बन चुकी है। इसी दशक में बहुदलीय लोकतंत्रा के आरंभ से ही, नेपाली भाषा की प्रबल भूमिका का विरोध तथा सभी भाषाओं को समान दर्ज़ा दिए जाने की माँग करने के लिए उन्होंने लोकतांत्रिाक संघर्षों की शुरुआत कर दी है। अनेक स्थानीय संस्थाएँ पहले ही कार्यालयी भाषाओं के रूप में स्थानीय भाषाओं का प्रयोग शुरू कर चुकी हैं। सरकार ने राष्ट्रीय भाषाओं के रूप में कुछ भाषाओं को मान्यता प्रदान की है, जैसे – हिन्दी, नेवाड़ी, गुरुंग, तिम्बू व गोरखा।

बोध प्रश्न १

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए इकाई के अंत में आदर्श उत्तर देखें।

१) नेपाल में समाज की धार्मिक संरचना का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

२) देशज नृजातीय समूहों के बीच सबसे प्रभावशाली समूह है ....., जबकि सबसे बड़ा समूह है .....।

१२.४ अर्थव्यवस्था

नेपाल के राजनीतिक एवं आर्थिक विकास संबंधी आधुनिक इतिहास १९५१ में राणा वंश के शासन की समाप्ति और संवैधानिक राजतंत्रा की स्थापना के साथ शुरू हुआ। इस नयी लोकतांत्रिक सरकार के पास प्रतीयमानत: विकास के कोई आधुनिक साधन नहीं थे। निरंकुश शासन से विरासत में जो मिला वो था – एक कमज़ोर परिवहन एवं संचार व्यवस्था, कुछ एक शिक्षा-संस्थाएँ तथा पुरानी नौकरशाही। चूँकि शिक्षा के अवसर नगर-क्षेत्रा में इने गिने कॉलेजों और कुछ परम्परागत स्कूलों तक ही सीमित थे, मात्रा दो प्रतिशत जनसंख्या ही शिक्षित थी। अर्थव्यवस्था, जो मात्रा जीवनयापन के स्तर पर ही आत्मनिर्भर थी, बढ़ती आबादी की समस्या का सामना कर रही थी। खेती-योग्य भूमि सीमित थी और ग़ैर-कृषि रोज़गार अवसर वहीं तक सीमित थे जो सशस्त्रा सेनाओं तथा उन इने गिने उद्योगों द्वारा प्रदान किए जाते थे जो १९४० के दशक में तराई क्षेत्रा में लगाए गए थे। यही परिस्थितियाँ थीं जिनमें रहकर आधुनिक नेपाल आर्थिक और सामाजिक विकास के रास्ते पर आगे बढ़ा।

१२.४.१ नियोजित आर्थिक विकास

नयी संवैधानिक शासन-व्यवस्था के आरंभिक चरण में राजा तथा राजनीतिक दलों के नेताओं के बीच मतभेद रहे। तथापि, देश के आर्थिक विकास एवं आधुनिकीकरण की आवश्यकता पर एक सर्वसम्मति थी। १९५६ से अपनायी गई पंचवर्षीय योजनाओं के तहत सामान्यतया उत्पादन एवं रोज़गार बढ़ाने, आधारभूत संरचना को विकसित करने; आर्थिक स्थिरता लाने; उद्योग, वाणिज्य एवं अन्तरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने; आर्थिक विकास में मदद के लिए प्रशासनिक एवं लोक सेवा संस्थाएँ स्थापित करने; तथा अल्प रोज़गार की स्थिति को कम करने के लिए श्रम-साधित उत्पादन तकनीकें लागू करने के लिए कठोर प्रयास किये गए। योजनाओं के सामाजिक लक्ष्य स्वास्थ्य एवं शिक्षा में सुधार लाने के साथ-साथ समाज आय वितरण को भी प्रोत्साहित करने वाले थे।

हर एक योजना की भिन्न विकास प्राथमिकताएँ रहीं। प्रथम चार योजनाओं ने आधारभूत ढाँचे को विकसित किए जाने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। ऐसा देश के भीतर माल व सेवाओं के समगतिक संचालन में मदद करने तथा घरेलू बाजार को विस्तार प्रदान करने की दृष्टिकोण से किया गया। इन योजनाओं ने प्रतिव्यक्ति आय में कोई वृद्धि नहीं की, न ही ग़रीबी के स्तर पर कोई खास प्रभाव डाला। कृषि-क्षेत्रा, जो सकल घरेलू उत्पाद के ५६ प्रतिशत का योगदान देता था, कमोबेश सुस्त ही रहा। इसने योजनाकारों पर विकास प्राथमिकताओं में परिवर्तन करने पर दबाव डाला। पाँचवीं तथा छठी योजनाओं (१९७५-८५) में ग़रीबी की समस्या को लिया गया और कृषि को उच्च प्राथमिकता दी गई। गन्ना और तम्बाकू जैसे नकदी फसलों के उत्पादन में महत्त्वपूर्ण बढ़ोत्तरी के बावजूद, सार्वजनिक क्षेत्रा के उद्यमों द्वारा उठाये गए नुकसानों के कारण आर्थिक विकास में मंदी ही रही। सातवीं योजना अवधि में सरकार ने अन्तरराष्ट्रीय वित्त संस्थाओं द्वारा निर्धारित आर्थिक नीतियाँ अपनायीं। इस योजना ने अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्रा एवं स्थानीय शासन की भागीदारी को बढ़ावा दिए जाने का प्रयास किया। पहली बार योजना में लोगों की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। वन एवं मृदा संरक्षण, जन-संसाधन का विकास, निर्यात प्रोत्साहन, पर्यटन का विकास, जनसंख्या नियंत्राण, तथा घरेलू संसाधन संघटन को प्राथमिकता दी गई।

इन विकास योजनाओं को बाहरी स्रोतों से काफी मात्राा में वित्त प्रदान किया गया। शुरू-शुरू में, विदेशी सहायता अनुदानों एवं ऋणों के रूप में आयी। प्रमुख ऋणदाता देश थे – भारत, अमेरिका, चीन, जापान, सोवियत संघ, एवं अन्य विकसित देश। सत्तर के दशक से विश्व बैंक के बहुपक्षीय सहायता कार्यक्रम तथा एशियाई विकास बैंक इन विकास योजनाओं को वित्त प्रदान करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे।

दलरहित पंचायत व्यवस्था (१९६१-१९९०) के अंतर्गत नियोजित विकास प्रयासों का एक आलोचनात्मक मूल्यांकन दर्शाता है कि पंचवर्षीय योजनाएँ अपने उद्देश्यों को पूरा करने में कुल मिलाकर असफल ही रहीं। सड़कों के विस्तार, उच्च ऊर्जा उत्पादन क्षमता, संवर्धित सिंचाई सुविधाओं, साक्षरता दरों एवं स्वास्थ्य रक्षा में सुधारों के बावजूद जनसंख्या की तीव्र वृद्धि पर नियंत्राण नहीं रखा जा सका। परिणामत: प्रतिव्यक्ति आय कम ही रही। इसके अतिरिक्त, आम जनता के बीच व्यापक आय विषमता थी। अपर्याप्त रूप से क्रियान्वित योजना देश के पर्वतीय क्षेत्राों व तराई के इलाकों के बीच बढ़ी क्षेत्राीय विषमता में भी परिणत हुई। ऐसा मुख्य तौर पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्राों में असमान निवेशों के कारण हुआ, जिसने देश के नाजुक परितंत्रा पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला। इसके अलावा, योजना प्रक्रिया जन भागीदारी उत्पन्न करने में भी असफल रही क्योंकि सभी फैसले उन राजनेताओं व नौकरशाहों द्वारा लिए जाते थे जिन पर विदेशी ऋणदाताओं का प्रभाव रहता था। राष्ट्रीय विकास परिषद् तथा राष्ट्रीय योजना आयोग जो कि योजना कार्य में मुख्य अंग थे, के सदस्यगण जन-साधारण के प्रति अनुत्तरदायी रहे।

१२.४.२ नब्बे के दशक में आर्थिक सुधार

बहुदलीय लोकतंत्रा के लागू होने के बाद, सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि में ५ प्रतिशत की सालाना बढ़ोत्तरी के उद्देश्यों को लेकर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के संवर्धित संरचनात्मक संमजन सुविधा (ESAF) के तहत गत कुछ वर्षों में शुरू किए गए संरचनात्मक कार्यक्रम आगे बढ़ाए गए। नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व में प्रथम लोकतांत्रिाक सरकार द्वारा निरूपित आठवीं पंचवर्षीय योजना (१९९२-९७) में ग़रीबी के स्तर को ४९ प्रतिशत से घटाकर ४२ प्रतिशत पर लाने का उद्देश्य सामने रखा गया (जिसको खाद्य एवं अन्य अल्पतम इतर-खाद्य वस्तुओं के २१२४ कैलोरी का उपभोग करने के पर्याप्त आय-स्तर के रूप में परिभाषित किया गया)। इस पंचवर्षीय योजना में कृषिक विकास, सतत विकास, क्षेत्राीय असंतुलनों में कमी और संसाधन परिरक्षण के लिए एक दीर्घकालिक संदर्श योजना तैयार की गई।

इस योजना अवधि में दूरगामी बाजारोन्मुखी आर्थिक सुधार लागू किए गए। सरकार ने निजीकरण कानून और उसी के साथ नियम व दिशा-निर्देश लागू कर दिए जिनका उद्देश्य था – सरकार पर बोझ घटाना और अन्य क्षेत्राों के लिए संसाधन लोकार्पित करना। बड़े पैमाने पर वित्तीय सुधार भी लागू किए गए ताकि उदारीकरण प्रक्रिया मज़बूत हो। नेपाली मुद्रा को सभी चालू खाता लेन-देनों में विनिमेय बनाया गया। मौद्रिक नीति में सुधार लाया गया ताकि घरेलू संसाधन संघटन में वृद्धि हो, पूँजी की साधकता बढ़े, और साथ ही प्राथमिकता एवं उत्पादक क्षेत्राों को ऋण उपलब्ध कराया जाए। बदले प्रसंग में व्यापार नीति का उद्देश्य था – सुधारीकृत आयात प्रबंधन, निर्यात प्रोत्साहन एवं विविधता के माध्यम से व्यापार असंतुलन को कम करना।

इन नीतिगत पहलकारियों के परिणामस्वरूप, कुटीर एवं लघु उद्योग, यथा रोज़गार का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत, ११ प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ा। पर्यटन जो कि नेपाली अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, इस अवधि में साढ़े छह प्रतिशत की औसत दर से बढ़ा। कृषि क्षेत्रा के अनिष्पादन के बावज़ूद, देश ने ४.६५ प्रतिशत प्रति वर्ष की समग्र आर्थिक वृद्धि दर्ज की।

नौवीं योजना (१९९८-२००२) ने पिछली योजना के दौरान शुरू किए गए संरचनात्मक परिवर्तनों को सामने रखा। एक महत्त्वाकांक्षी दीर्घावधि विकास योजना भी तैयार की गई ताकि नेपाल को एक प्रतिस्पर्धी, सक्षम और तकनीकी रूप से अनुस्थापित समाज बनाया जा सके। तथापि, राजनीतिक अस्थिरता और इस अवधि में माओवादी विद्रोह द्वारा मचायी गई हिंसा का सभी क्षेत्राों पर प्रतिकूल

प्रभाव पड़ा है। सकल घरेलू उत्पाद ने पाँच से कम वर्षों में एक नकारात्मक वृद्धि दर दर्ज की अथवा मंद ही रही; पर्यटन को धक्का लगा, श्रमिक एवं राजनीतिक अशांति की वजह से औद्योगिक उत्पादकता घटी। नेपाल में बने-बनाये वस्त्रों, पश्मीना उत्पादों तथा ऊनी कालीनों से होने वाली निर्यात आय को विदेशों से माँग कम होने के कारण घाटा उठाना पड़ा। बढ़ते व्यापार घाटे के बावज़ूद नेपाल का भुगतान शेष देश से बाहर जाकर काम करने वाले नेपालियों द्वारा घर भेजे जाने वाले धन की वजह से बढ़ा है।

१२.५ आर्थिक क्षेत्र

१२.५.१ कृषि क्षेत्र

कृषि नेपाली अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। यह जनसंख्या के लगभग ८०% को जीविका प्रदान करती है और सकल घरेलू उत्पाद के ४५% का दायित्व लेती है। ऊबड़-खाबड़ ज़मीन के कारण कुल मिलाकर केवल २० प्रतिशत भूमि ही जोतने योग्य है। यथार्थत:, नेपाल के पास विश्व में सबसे कम प्रतिव्यक्ति खेती योग्य भूमि है। कृषि मुख्य रूप से देश के तराई क्षेत्रों तक ही सीमित है, जबकि पर्वतीय क्षेत्रा में खेती अधिकांशत: स्थानीय उपभोग के ही लिए है। कृषि उत्पादों में शामिल हैं – चावल, भुट्टा, गेहूँ, गन्ना, कंद-मूल फसलें आदि। चावल सबसे महत्त्वपूर्ण फसल है चूँकि नेपाल का मुख्य आहार यही है। पाँचवीं पंचवर्षीय योजना से कृषि को शीर्ष प्राथमिकता दी गई। कृषि उत्पादन को बढ़ाने और कृषि आधार में विविधता लाने के लिए सरकार ने सिंचाई-सुविधाओं को सुधारने, किसानों को ऋण-सुविधाएँ मुहैय्या कराने तथा उच्च-उत्पादक-किस्म के बीजों, उर्वरकों, कीटनाशकों व कृतन्कनाशकों, आदि के प्रयोग को बढ़ावा दिए जाने पर ध्यान देना शुरू किया है। इन उपायों के बावज़ूद कृषि ने २.४% की निराशाजनक दर से वृद्धि की और जनसंख्या वृद्धि दर के साथ सामंजस्य रखने में विफल रही, जो कि २.६% प्रतिवर्ष के बराबर थी। कार्यक्षम वितरण प्रणाली के अभाव तथा अवैज्ञानिक कृषि प्रथाओं के कारण पर्यावरणीय ह्रास ने नेपाल में कृषि प्रगति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है।

१२.५.२ भूमि सुधार

नेपाल सीमित खेती-योग्य भूमि वाला एक कृषि-प्रधान समाज है। स्थल मार्ग और खेत का आकार आर्थिक विकास से महत्त्वपूर्ण रूप से जुड़े होते हैं। तथापि, नेपाल में ज़मीन कुछ मुट्ठीभर लोगों के ही पास है, जो कि लम्बे समय तक इस भू-भाग पर छायी रही सामन्तिक व्यवस्था की बपौती है। १९६० के दशक-मध्य में सरकार ने भूमि-सुधारों वे ज़मीनी बंदोबस्त की दोहरी नीति पर काम करना शुरू किया। भूमि-सुधार का मूल उद्देश्य था – काश्तकार किसानों की रक्षा करना, भू-स्वामियों से अतिरिक्त जोतों को ले लेना और छोटे पट्टों व भूमिहीन कुटुम्बों वाले किसानों को सम्पत्ति वितरित करना। १९६३ के कृषि पुनर्गठन अधिनियम तथा १९६४ के भूमि-सुधार अधिनियम ने पट्टेदार किसानों की निश्चिंतता पर ज़ोर दिया और भूमि जोतों का सीमा-निर्धारण कर दिया। इसी अवधि के आसपास भूमि विकास और बंदोबस्त कार्यक्रम शुरू किए गए ताकि अतिरिक्त भूमि को खेती के तहत लाया जा सके और भूमिहीन व छोटे किसानों को स्थायी रूप से बचाया जा सके। दुर्भाग्यवश, सभी भूमि सुधारों व पुनर्वास कार्यक्रमों में ढेरों खामियाँ थीं, जिन्होंने इन योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा डाली। १९९१ में एक विश्व बैंक सर्वेक्षण ने अनुमान लगाया कि पाँच प्रतिशत मालिकों के हाथ में लगभग ४० प्रतिशत कृष्ट भूमि है, जबकि ६० प्रतिशत जनता के पास सिर्फ़ २० प्रतिशत कृष्ट भूमि ही हैं। १९७० वें दशक के उत्तरार्ध से सरकार ने विशेष रूप से छोटे किसानों के सहायतार्थ योजनाएँ शुरू की हैं, परन्तु एक बाद फिर इनका सीमित प्रभाव ही पड़ा है।

१२.५.३ उद्योग-धन्धे

नेपाल का औद्योगिक आधार सीमित है। उद्योग सकल घरेलू उत्पाद के लगभग २० प्रतिशत का योगदान देते हैं। १९९९ के वित्त वर्ष में औद्योगिक उत्पादन ८.७% की दर से बढ़ा। अधिकतर उद्योग

कृषि-आधारित उद्योग हैं, जैसे – चीनी, पटसन, और चाय। अन्य उद्योग कच्ची सामग्रियों पर निर्भर हैं, जो कि विदेशों से आयात की जाती हैं, खासकर भारत से। बियर, तिलहन, गलीचे, पोशाकें, सिगरेट, जूते, माचिस, रसायन, कागज़, आदि। अधिकांश विनिर्माण उद्योग लघु अथवा कुटीर उद्योगों के रूप में हैं। मध्यवर्ती अथवा पूँजीगत माल उद्योग नेपाल में बहुत कम हैं।

नेपाल के अधिकांश विनिर्माण उद्योग काठमाण्डू और पूर्वी तराई क्षेत्रा में स्थित हैं। बड़े पैमाने के उद्यम काठमाण्डू घाटी, हेतौदा, वीरगंज, जनकपुर, विराटनगर और झापा में संघनित हैं। वस्त्रा-उद्योग, अभियांत्रिाकी, निर्माण, खाद्य-प्रसंस्करण उद्योग, इमारती लकड़ी एवं वनाधारित उद्योग, चीनी, सिगरेट, माचिस तथा धातु-कर्म उद्योग इस औद्योगिक गलियारे में प्रमुख उद्योग हैं। नेपालगंज, वीरगंज, विराटनगर, जनकपुर व भैरवा जैसे कुछ औद्योगिक केन्द्र भारतीय रेल-मुहानों के नज़दीक स्थित हैं जो कलकत्ता व अन्य भारतीय बाज़ारों को एक आसान पहुँच-मार्ग मुहैया कराता है। हेतौदा के अलावा, जो कि एक नए औद्योगिक केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया था, सरकार की संतुलित क्षेत्रीय औद्योगिक विकास लाने वाली नीति के बावज़ूद उद्योगों का भौगोलिक प्रतिमान वही रहा।

१२.५.४ औद्योगिक नीतियाँ

नेपाल ने विभिन्न उद्योगों में निवेश को बढ़ावा देकर औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन देने का प्रयास किया। १९५७ औद्योगिक नीति विवरण में औद्योगिक निवेशों को बढ़ाने के लिए अनेक उपायों की घोषणा की गई थी, जैसे – नए जोखिम कार्यों में कर में छूट, विदेशी निवेश में लाभों का प्रत्यावर्तन, आधारभूत ढाँचे का विकास, उपयुक्त श्रम कानून-निर्माण, बिजली व कच्चा माल निम्न व रियायती दरों पर उपलब्ध कराना, औद्योगिक संयत्रा लगाने के लिए भूमि उपलब्ध कराना, शुल्क दर संरक्षण, आदि। औद्योगिक उद्यम अधिनियम, १९६१ ने नए व्यवसाय जोखिम के लिए १० वर्षीय कर ''अवकाश'' व अन्य कई प्रोत्साहनों का प्रस्ताव रखा ताकि औद्योगिक निवेशों को बढ़ावा मिले। उद्योगीकरण को बढ़ावा देने के लिए १९६० के दशक में बालाजू, हेतौदा तथा पाटन औद्योगिक सम्पदाएँ स्थापित की गईं। सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्रा उपक्रम को भी स्थापित किए जाने को प्रोत्साहित किया क्योंकि उसे लगा कि निजी उद्योग औद्योगिक विकास के लक्ष्यों को हासिल करने में अक्षम हैं। १९८५-८६ में इस उद्योग-नीति की समीक्षा की गई। नई नीति ने उद्योगों के लिए पंजीकरण प्रक्रियाओं को सरलीकृत कर दिया, संसाधन-आधारित उद्योगों पर ज़ोर दिया और निर्यातोन्मुखी उद्योगों को प्रोत्साहन प्रदान किया। सरकार ने निजीकरण प्रक्रिया को भी शुरू किया। तथापि, सार्वजनिक क्षेत्रा के उपक्रमों में लाभों के निम्न स्तर की वजह से, इन उपक्रमों के शेयर खरीदने वाले लोग थोड़े ही थे। नब्बे के दशकारंभ में अर्थव्यवस्था के उदारीकरण से ही देश के औद्योगिक विकास में निजी क्षेत्रा की भागीदारी को अधिक सबल बनाने के प्रयास होते रहे हैं।

औद्योगीकरण के निम्न स्तर के मुख्य कारणों में एक है – निवेश की पूँजी का अपर्याप्त होना। अन्य कारणों में शामिल हैं – देश की भौगोलिक दूरस्थता, सीमित बाज़ार आधार, प्राकृतिक संसाधनों का अभाव, प्रयुक्त ऊर्जा संसाधन जैसे जल-विद्युत्, कुशल श्रमिकों का अभाव, ठेकेदारी व तकनीकी कौशलों का अभाव, आयात-निर्भरता का उच्च स्तर। प्रोत्साहन देने के बावज़ूद नेपाल औद्योगिक क्षेत्रा में विदेशी निवेशों को आकर्षित में असफल रहा।

१२.५.५ पर्यटन

पर्यटन ही नेपाल का सबसे बड़ा उद्योग है जो देश की कुल विदेशी मुद्रा आय के १५ प्रतिशत को आकर्षित करता है। यह नेपाल में तीन लाख से भी अधिक लोगों को रोज़गार मुहैया कराता है। नेपाल प्राकृतिक सुरम्य सुन्दरता, विपुल सांस्कृतिक विरासत तथा विविध सैर-सपाटा स्थलों एवं अपूर्व अनुभव अवसरों से सम्पन्न है। पर्यटन १९५० के दशक में आरम्भ किया गया, जिसको और अधिक बढ़ावा तब मिला जब विदेशी नागरिकों के प्रवेश पर से प्रतिबंध हटा लिया गया। तभी से दुनिया भर से नेपाल भ्रमण पर आने वाले पर्यटकों की संख्या में नियमित वृद्धि होती रही है। अधिकांश पर्यटक वैसे एशिया से आते हैं, खासकर भारत से; जापान का दूसरा नम्बर है। ये पर्यटन छुट्टियाँ

मनाने, लम्बी पदयात्राा करने और पर्वतारोहण आदि उद्देश्यों से यहाँ आते हैं। हाल के वर्षों में वैश्विक अर्थव्यवस्था के धीमे पड़ने, माओवादी विद्रोह और विश्व के विभिन्न भागों में आतंकवादी हमलों की वजह से नेपाल में पर्यटक प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

१२.५.६ व्यापार

नेपाल के विदेश व्यापार का अभिलक्षण है – निर्मित उत्पादों का आयात और कृषिक कच्ची सामग्रियों का निर्यात। नेपाल में होने वाले आयात में मुख्य रूप से शामिल हैं – सोना, कल-पुर्जे व उपकरण, पैट्रोलियम उत्पाद, उर्वरक, आदि। भारत ही नेपाल का प्रमुख व्यापार साझी है। नेपाल भारत को अपने माल के लगभग ४८ प्रतिशत का निर्यात करता है; इसके बाद अमेरिका और जर्मनी आते हैं, जिनका निर्यात नेपाल के कुल निर्यातों का क्रमश: २६ प्रतिशत व ११ प्रतिशत है। इसी प्रकार, नेपाल अपने माल का ३९ प्रतिशत आयात भारत से करता है; उसके बाद आते हैं सिंगापुर और चीन, अपने कुल आयातों के क्रमश: १० प्रतिशत एवं ९ प्रतिशत के साथ। निर्यात बढ़ाने के लिए नेपाल ने अनेक वित्तीय एवं आर्थिक कदम उठाये, जैसे – निर्यात पात्राता कार्यक्रम तथा कर छूट एवं नगद अनुदानों के साथ दूना विदेश विनिमय। आयातों ने बहरहाल, गत वर्षों में बढ़ोत्तरी दर्ज की। १९८९ में नेपाल ने अन्य बातों के अलावा, व्यापार घाटे की भरपाई के लिए संरचनात्मक समंजन कार्यक्रम शुरू किया और देश के आर्थिक विकास को और आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

१२.६ नेपाल-भारत व्यापार संबंध

नेपाल की भौगोलिक अवस्थिति एवं ऐतिहासिक बंधनों ने नेपाली अर्थव्यवस्था को भारत के साथ अखण्ड्य रूप से जोड़ा है। दक्षिण की ओर भारत के साथ निर्यात बाज़ार को विकसित करने की संभावना सुलभ है क्योंकि यहाँ परिवहन अवरोध पर्वतीय उत्तर के मुकाबले कम हैं। इसके अतिरिक्त, नेपाल के अनेक कृषिक एवं औद्योगिक केन्द्र तराई क्षेत्रा में संकेन्द्रित हैं। १९५० के दशक में ९० प्रतिशत से भी अधिक विदेश व्यापार भारत से ही होता था, परन्तु गत वर्षों में भारत और नेपाल के बीच व्यापार की कुल मात्राा पर्याप्त रूप से घटी है। तिस पर भी, विदेश व्यापार में विविधता लाने और उसे भारत पर कम निर्भर बनाने के बावज़ूद, भारत नेपाल का प्रमुख व्यापार साझी बना ही हुआ है। नेपाल की अधिकांश मूल उपभोक्ता वस्तुएँ और औद्योगिक कल-पुर्जे एवं उपकरण भारत से ही आयात किए जाते हैं; जबकि कृषिक वस्तुएँ भारत को निर्यात की जाती हैं। दोनों देशों के बीच कानूनी कारोबार के अलावा, विशाल अलिखित व्यापार भी है, जो कि दोनों देशों के बीच चलता ही रहता है।

भारत के अलावा अन्य देशों के साथ नेपाल के व्यापार में शामिल हैं – भारतीय सीमाक्षेत्रा से होकर बाहरी देशों से माल का लाना-ले जाना। इसी कारण, भारत के एक ओर से दूसरी ओर तक पारगमन दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों पर ही निर्भर करता है। १९५० में भारत और नेपाल के बीच व्यापार एवं वाणिज्य संधि के तहत, भारत नेपाल को पारगमन सुविधाएँ उपलब्ध कराने पर सहमत हो गया। तदोपरांत, भारत के मार्फ़त भेजने-ले जाने वाले माल पर से सीमा-शुल्क हटा दिया गया, २१ सीमा पारगमन स्थल प्रदान किए गए और भेजने-लाने में माल के भण्डारण के लिए नेपाल को कलकत्ता बंदरगाह पर गोदामघर उपलब्ध कराया गया। भारत और नेपाल ने १९६० में और फिर १९७१ में व्यापार एवं पारगमन संधियों पर हस्ताक्षर किए। इन संधियों ने एक पारस्परिक आधार पर एक-दूसरे को सर्वाधिक समर्थित राष्ट्र का दर्जा दिलवाया और एक इतर-पारस्परिक आधार पर भारत द्वारा कुछ वरीयताओं को विस्तार भी। १९७८ में दोनों देशों की सरकारों के बीच व्यापार और पारगमन हेतु पृथक् संधियों पर हस्ताक्षर किए गए। मार्च १९८३ में इस संधि को नवीकृत किया गया, जो कि तदोपरांत मार्च १९८८ में समाप्त हो गयी। तभी से क्योंकि दोनों के बीच कोई नयी संधि पर सहमति नहीं बन सकी, भारत ने नेपाल में प्रवेश के लिए मात्रा दो स्थलों को छोड़कर शेष सभी बन्द कर दिये।

दोनों देशों के बीच व्यापार वार्ताओं में १९८९ की ज़िच ने नेपाली अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। नेपाल के निर्यात ऊँची शुल्क दरों के अधीन हो गए और भारत से होने वाले आयात पर भी लागतें अधिक पड़ने लगीं। अनिवार्य उपभोक्ता वस्तुओं, जैसे नमक, ईंधन, शिशु-आहार, दवाओं, आदि का पूरी तरह अभाव हो गया। अन्ततोगत्वा, दोनों ही देशों में हो रहे राजनीतिक परिवर्तनों के चलते, व्यापार एवं पारगमन विवाद जून १९९० में हल हो गया। इसीलिए नेपाल के लिए, किन्हीं भी आर्थिक कठिनाइयों से बचने के लिए ज़रूरी है कि वह भारत के साथ एक दोस्ताना संबंध कायम रखे।

बोध प्रश्न २

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर के लिए इकाई के अंत में आदर्श उत्तर देखें।

१) प्रारंभिक पंचवर्षीय योजनाओं का मुख्य उद्देश्य क्या था?

.....

.....

.....

.....

.....

२) नेपाल का सबसे महत्त्वपूर्ण व्यापार साझीदार कौन है और क्यों?

.....

.....

.....

.....

३) नेपाली अर्थव्यवस्था पर ऊँची जनसंख्या वृद्धि का क्या प्रभाव पड़ा है?

.....

.....

.....

.....

१२.७ सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि भू-वेष्टित देश नेपाल तीन विशिष्ट अक्षांतरीय भौगोलिक क्षेत्रों में बँटा है। नेपाल की जलवायु उत्तर में गर्मियों से कड़ाके की सर्दियों तक तथा दक्षिण में हल्की सर्दियों तक ठण्डी है। चूँकि यह एक चारों ओर ज़मीन से घिरा देश है जहाँ समुद्र तक कोई सीधी पहुँच नहीं है, नेपाल को अटकावों, टूट-फूट आदि तथा योजना व निवेश संबंधी अनिश्चितताओं के रूप में अनेक कठिनाइयों को सामना करना पड़ा है। पारगमन सुविधाओं में अवरोध निर्यात हतोत्साहन के रूप में सामने आये हैं। इसके अलावा, नेपाल अपने सभी क्षेत्रों के विकास के लिए आयातों पर निर्भर करता है। ऊँची पारगमन लागत ने भी विकास लक्ष्यों पर और मुद्रा-स्फीति को नियंत्रित करने के लिए निवेश लागतों को कम करने में एक नकारात्मक प्रभाव डाला है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने नेपाल को विश्व में एक अल्पतम विकसित राष्ट्र घोषित किया है, जिसकी लगभग आधी आबादी ग़रीबी-रेखा से नीचे है। नेपाल एक कृषि-प्रधान देश है। यहाँ एक सामन्तिक समाज है जिसमें सुपरिभाषित सामाजिक स्तरीकरण देखा जाता है। हमने देखा कि लोगों का नानारूप नृजातीय-धार्मिक घालमेल नेपाल को एक अनोखी सांस्कृतिक विरासत प्रदान करता है।

राजतंत्रा द्वारा बहुदलीय लोकतंत्रा का मार्ग खोले जाने के साथ ही, नेपाली अर्थव्यवस्था और समाज दोनों ही व्यापक परिवर्तनों की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। तथापि, जैसा कि हमने देखा, राजनीतिक अस्थिरता और आबादी की उच्च वृद्धि दरें मुख्य अवरोध बनी ही हुई हैं।

१२.८ कुछ उपयोगी पुस्तकें

करण, प्रद्युम्न व अन्य (१९९४), *नेपाल : डवलॅपमण्ट एंड चेन्ज इन ए लैंडलॉक्ड हिमालयन किंग्डम,* टोक्यो : एशिया तथा अफ्रीका भाषा एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान्।

चौहान, आर.एस. (१९८९), *सोसाइटी एण्ड स्टेट बिल्डिंग इन नेपाल,* नई दिल्ली : स्टर्लिंग पब्लिशर्ज़ प्राइवेट लिमिटेड।

जोशी, एस.सी. (सं.), *नेपाल हिमालय ईकॉलॅजीकल पर्सपैक्टिव्ज़,* नई दिल्ली : हिमालयन रिसर्च ग्रुप।

पन्त, वाई.पी. (१९९१), *ट्रेड एण्ड कॉपरेशन इन साउथ एशिया: ए नेपालीज़ पर्सपैक्टिव,*नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।

शर्मा, के.एन. (१९९४), *नेपाल'ज़ इकॉन्मिक डिवॅलॅपमण्ट पॉलिसीज़ – पॅलिटिकॅल इम्पिलकेशन,* नई दिल्ली : रिलाइन्स पब्लिशिंग हाउस।

१२.९ बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न १

१) नेपाली जीवन और समाज में धर्म की एक अभिन्न स्थिति है। यद्यपि नेपाल संवैधानिक रूप से एक हिन्दू राज्य घोषित है परन्तु यहाँ हिन्दू और बौद्ध धर्म के घालमेल की बहुतायत है। तथापि, नवीनतम जनगणना के अनुसार, ८० प्रतिशत जनसंख्या हिन्दू है, ११ प्रतिशत बौद्ध और ४ प्रतिशत मुस्लिम।

२) नेवाड; मागर

बोध प्रश्न २

१) आधारभूत ढाँचे का विकास

२) भारत ही नेपाल का सबसे प्रमुख व्यापार साझी है क्योंकि नेपाल के निर्यात का ४८% भारतीय बाज़ारों के लिए ही नियत है और वह भारत से अपने माल का ३९% आयात करता है। इसके अलावा, भौगोलिक रूप से भी, नेपाल के लिए यह सुखद और लाभदायक है कि वह भारत के साथ अपने व्यापार संबंध बढ़ाये।

३) तीव्र जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप, प्रतिव्यक्ति आय कमोबेश स्थिर रही है। बिगड़ते भूमि-जन अनुपात ने फसलों, ईंधन और चारा आदि के लिए वन-आवरण के नि:शेषीकरण की ओर प्रवृत्त किया है।